भविष्यदत्त काव्य के रचयिता का जीवन परिचय प्रस्तुत करें (4)

भविष्यदत्त काव्य महाराष्ट्री प्राकृत का एक ऐसा सरल एवं रोचक कथा-काव्य है जिसके माध्यम से कवि महेश्वर सूरि ने श्री पंचमी नामक व्रत-त्यौहार के महत्त्व को प्रकाशित किया है। यह काव्य णाणपंचमी कहा नामक ग्रन्थ से उद्धृत है। महेश्वर सूरि नाम के आठ आचार्य प्रसिद्ध हैं, जिसके कारण इस काव्य के रचयिता के संबंध में मतभेद हो जाता है परन्तु णाणपंचमी कथा के अंतिम गाथा में यह प्रसंग वर्णन किया गया है: —

दोपक्खुज्जोयकरो दोसासंजोण वज्जिओ अमओ।
सिरिसज्जणउज्झाओ अउव्वचंदुव्व अक्खलओ॥
सीसेण तस्स कहिमा दसवि कहाणा इमे उ पंचमिए।
सूरिमहेसरएणं भविमाण-बोहणट्ठाए॥

इससे स्पष्ट होता है कि महेश्वर सूरि सज्जन उपाध्याय के शिष्य थे। और इसी शिष्यत्व के कारण यह कवि अन्य समान नामधारी कवियों से भिन्न है। कवि ने अपने समय के विषय में कोई भी स्पष्ट सूचना नहीं दी किंतु 'णाणपंचमी कहा' की एक प्राचीनतम ताड़पत्रीय प्रति वि० सं० 1109 की मिली है, उसके आधार पर यह निश्चित है कि यह कवि उसके पूर्व ही हुआ होगा।

जर्मन के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ० हर्मन याकोबी ने उक्त काव्य का रचनाकाल 10वीं सदी तथा डा० एच० सी० भायाणी ने विविध प्रमाणों के आधार पर उसका रचनाकाल आचार्य हेमचन्द्र के पूर्व माना है।

इसी भविष्यदत्त काव्य से कथा बीजों को ग्रहण कर अपभ्रंश में भविष्यदत्त कथा नामक एक सुन्दर कथा ग्रन्थ भी कवि धनपाल के द्वारा लिखा गया। डा० विण्टरनीज का अनुमान है कि इस ग्रन्थ की रचना भविष्यदत्त काव्य के रचयिता महेश्वर सूरि के काव्य ग्रन्थ के आधार पर हुई है। अतः उनके मतानुसार महेश्वर सूरि का समय 10वीं सदी के आस-पास होना चाहिए।

भविष्यदत्त कथा में मध्यकालीन भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म-दर्शन, पुनर्जन्म (पुनर्जन्म, समुद्री-यात्रा एवं विदेश-व्यापार आदि के वर्णन प्रसंगों में मानव के विविध चरित्रों का भी सुन्दर उद्घाटन किया है) इस कथा की लोकप्रियता इसी से जानी जा सकती है कि विविध कालों में विविध भाषाओं में इस विषय पर अनेकों ग्रन्थ लिखे गए। इस काव्य की कथा बड़ी ही रोचक और काव्य-चमत्कारों से युक्त है। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी यह एक सुन्दर खण्डकाव्य है।

इसमें नगर, ग्राम, वन, ऋतु, सरिता, समुद्र आदि का मनोरम वर्णन इस काव्य में उपलब्ध होता है। निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि भविष्यदत्त काव्य एक सफल खण्डकाव्य है।